E content for the student of Patliputra University

Sub- Political science

B.A. (Hons.) Part I Paper II

Topic - American President and British Prime Minister: A comparative study

Dr Umesh Chandra Shukla
Associate Professor, Political Science
R.R.S. College, Inderama.

अमेरिकी राष्ट्रपति और ब्रिटिश प्रधान मंत्री विश्व के दो महान पुराने लोकतांत्रिक व्यवस्था के सर्वोच्च शासक हैं। जहाँ अमेरिका की पहचान अध्यक्षात्मक प्रणाली, शक्ति पृथक्करण के साथ नियंत्रण एवं संतुलन के सिद्धांत, लिखित किन्तु छोटा संविधान न्यायिक पुनर्विलोकन आदि से है; वहाँ ब्रिटिश व्यवस्था की पहचान संसदीय शासन प्रणाली, एकात्मक व्यवस्था, शक्तियों का एकीकरण अलिखित संविधान, अभिसमयों की प्रधानता, वंशानुगत राजतंत्र, कानून का शासन आदि से है। दोनों ही राज्यव्यवस्थाओं की इतनी भिन्नता के साथ शासनाङ्गों का तुलनात्मक अध्ययन काफी दिलचस्पी पैदा करता है। इसका विश्लेषण निम्न आधार पर किया जा सकता है —

(1) पद पर चयन एवं नियुक्ति – दोनों का पद निर्वाचित है। अमेरिकी राष्ट्रपति को पहले दलीय प्रत्याशी के रूप में चयनित होना पड़ता है, उसके बाद आम जनता के बीच चुनाव की एक टेढ़ी प्रक्रिया का सामना करना पड़ता है। ब्रिटिश प्रधान मंत्री एक संसदीय चुनाव क्षेत्र से कॉमन सभा के सदस्य के रूप में चुना जाता है। दल के संसदीय दल के रूप में चुने जाने के बाद कॉमन सभा में बहुमत के समर्थन से रानी द्वारा प्रधानमंत्री नियुक्त किया जाता है।

(2) कार्यकाल – कॉमन सभा के प्रति उत्तरदायी होने के कारण ब्रिटिश प्रधानमंत्री का कार्यकाल अनिश्चित है। ~~बहुमत~~ कॉमन सभा में बहुमत के अभाव में वह कभी भी पदच्युत हो सकता है। साथ ही आगे के चुनावों में नेतृत्व एवं दलीय बहुमत के आधार पर वर्षों तक प्रधान मंत्री बना रह सकता है। इसके विपरीत अमेरिकी राष्ट्रपति चार वर्ष के निश्चित काल के लिए चुना जाता है। एक बार पुनर्निर्वाचन की परम्परा है। अर्थात अधिकतम आठ वर्ष कोई अमेरिका में राष्ट्रपति रह सकता है।

Scanned with CamScanner

3. पदच्युति - पदच्युति के प्रावधान की दृष्टि से ब्रिटिश प्रधानमंत्री कमजोर स्थिति में है। कॉमन सभा में उसके विरुद्ध सामान्य बहुमत से अविश्वास प्रस्ताव पारित होते वह पदच्युत हो जाता है। अमेरिकी राष्ट्रपति महाभियोग की बहुत कठिन प्रक्रिया द्वारा पदच्युत किया जा सकता है।

4. कार्यपालिका का क्षेत्र - कार्यपालिका के क्षेत्र में अमेरिकी राष्ट्रपति ब्रिटिश प्रधानमंत्री से ज्यादा अच्छी स्थिति में है। राष्ट्रपति अपने देश का राष्ट्राध्यक्ष भी है और शासनाध्यक्ष भी। ब्रिटिश प्रधानमंत्री कार्यपालिका के वास्तविक पक्ष का प्रतिनिधित्व करता है, आलंकारिक पक्ष का नहीं, जो सम्राट में निहित है। प्रधानमंत्री केवल शासनाध्यक्ष है, राष्ट्राध्यक्ष नहीं। अन्तिम रूप से प्रधानमंत्री के सभी निर्णयों पर मंत्रिमंडल की मुहर तथा सम्राट की स्वीकृति की आवश्यकता पड़ती है। इसके साथ संसदीय नियंत्रण के प्रावधानों का उसे सामना करना पड़ता है। मंत्रिमंडल में भी उसे दलीय समीकरण का पालन करते हुए विरोधियों को भी स्थान देना पड़ता है। अमेरिकी राष्ट्रपति के समक्ष इतनी लाचारी नहीं है। कैबिनेट के सदस्य उसके yes man होते हैं, नियुक्ति का निर्णय उसका स्वयं का होता है। सीनेट की सिफारिशों के कानूनी प्रावधानों से बचाव के रूप में सीनेटोरियल कर्टसी की परम्परा विकसित हुई है। इस प्रकार प्रधानमंत्री की तुलना में राष्ट्रपति के पास कार्यपालकीय शक्तियों के उपयोग में कम नियंत्रण है।

5. विधायी क्षेत्र — विधायी क्षेत्र में, ब्रिटिश प्रधानमंत्री अमेरिकी राष्ट्रपति से मजबूत स्थिति में है। प्रधानमंत्री की शक्ति का स्रोत कॉमन सभा के बहुमत का नेता होना है, इससे सदन उसके नियंत्रण में रहता है तथा विधेयकों को पारित कराने में उसे कोई कठिनाई नहीं होती है। अमेरिकी राष्ट्रपति और कॉंग्रेस में कोई प्रत्यक्ष लिंक नहीं होता है। उसे विरोधी सदन का भी सामना करना पड़ता है। अतः उसे विधायिका को अपने साथ लेने में ~~काफी~~ कठिनाई का सामना करना पड़ता है।

5. वित्तीय क्षेत्र - वित्तीय क्षेत्र में भी प्रधानमंत्री राष्ट्रपति से बेहतर स्थिति में है। बजट का निर्माण ब्रिटेन में वित्तमंत्री के नियंत्रण में वित्त विभाग करता है जो प्रधानमंत्री से पास होना होता है,

Scanned with CamScanner

जिसका नेता स्वयं प्रधान मंत्री होता है। इसके विपरीत अमेरिका में बजट का निर्माण एक स्वतंत्र निकाय ब्यूरो ऑफ द बजट के द्वारा किया जाता है तथा कांग्रेस से पारित करवाना होता है, जिसपर हमेशा राष्ट्रपति का नियंत्रण नहीं होता। अतः राष्ट्रपति को कठिनाई का सामना करना पड़ता है।

6. दलीय ढाँचा – दलीय ढाँचा के आधार पर देखा जा सकता है कि ब्रिटिश प्रधान मंत्री दलीय समर्थन का लाभ भी उठाता है तो कभी दलीय विरोध का सामना भी करता है। क्योंकि ब्रिटेन में मजबूत दलीय ढाँचा है। अमेरिका में दलीय ढाँचा काफी कमजोर है। अतः राष्ट्रपति के मार्ग में यह कभी अड़चन पैदा नहीं करता है।

7. वैदेशिक नीति – वैदेशिक नीति के संदर्भ में अमेरिकी राष्ट्रपति कुछ ज्यादा स्वतंत्रता का अनुभव करता है। किंतु 1919 के वर्साई की संधि के प्रस्तावों का सीनेट ने स्वीकृति न देकर राष्ट्रपति विल्सन को काफी किरकिरी की थी। आज राष्ट्रपति बहुत से समझौते Executive Aggreements के तहत करता है, जिसपर ~~राष्ट्रपति~~ सीनेट की स्वीकृति की आवश्यकता नहीं पड़ती है। ब्रिटिश प्रधान मंत्री को कैबिनेट, पार्लियामेंट तथा सम्राट की स्वीकृति की हमेशा आवश्यकता रहती है।

8. सामरिक शक्ति – सामरिक क्षेत्र में अमेरिकी राष्ट्रपति जितनी तत्परता से निर्णय ले सकता है, वैसा प्रधानमंत्री नहीं कर सकता। इसे हमेशा कैबिनेट और पार्लियामेंट को विश्वास में लेना होता है। अमेरिकी राष्ट्रपति को इसमें कोई कठिनाई नहीं होती क्योंकि वह ऐसी स्थिति का निर्माण कर सकता है, जिसमें राष्ट्र को युद्ध के निर्णय के अतिरिक्त कोई दूसरा विकल्प न हो।

तुलनात्मक अध्ययन के उपर्युक्त बिन्दुओं से स्पष्ट है कि दोनों ही शक्तिशाली हैं, जिसका प्रयोग वे के परिस्थिति, संवैधानिक प्रावधानों तथा व्यक्तित्व के आधार पर करते हैं। ब्रिटिश प्रधान मंत्री – चर्चिल, विल्सन-चेम्बरलेन, लायडजार्ज की तुलना अमेरिकी राष्ट्रपति रूजवेल्ट, विल्सन, कैनेडी, बुश, ओबामा, क्लिंटन से करने पर कोई विशेष अन्तर नहीं दीख पड़ेगा।